(Pierre Janet) तथा दार्शनिक गोबलोट (Goblot) उनके सहपाठी थे। लेवी ब्रूल तथा एस्पिनॉस (Espinas) जैसे होनहार समाजशास्त्री भी दुर्खीम के सहपाठी थे।

यद्यपि किसी भी युवा व्यक्ति के जीवन में इकोल अकादमी में प्रवेश पाना एक उपलब्धि माना जाता था लेकिन दुर्खीम इस अकादमी की कार्य-पद्धति से अधिक सन्तुष्ट नहीं थे। उनकी आरम्भ से ही नैतिक सिद्धान्तों तथा वैज्ञानिक विकास की नयी उपलब्धियों में रुचि थी। इसके विपरीत, अकादमी में फ्रेंच, लैटिन और ग्रीक दर्शन तथा साहित्य के अध्ययन पर जोर दिया जाता था। सम्भवत: यही कारण था कि दुर्खीम इस अकादमी में अपने सहपाठियों के बीच कुछ अलग-थलग पड़ गये। उन्होंने सन् 1882 में जब स्नातक की उपाधि प्राप्त की, तब शिक्षकों द्वारा भी उन्हें उत्तीर्ण विद्यार्थियों में बहुत निम्न स्थान दिया गया। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि इकोल अकादमी में अपने तीन वर्ष के अध्ययनकाल में दुर्खीम अपने शिक्षकों और सहपाठियों से पूरी तरह अप्रभावित रहे हों। जिन शिक्षकों से दुर्खीम अधिक प्रभावित हुए, उनमें से एक प्रत्यक्षवादी इतिहासकार एफ. डी. कुलान्गेस (F. D. Coulanges) तथा दूसरे इमाइल बुत्रोक्स (Emile Boutroux) जैसे महान दार्शनिक थे। प्रोफेसर कुलान्गेस ने सन् 1880 में अकादमी का निदेशक बनने पर वहाँ के पाठ्यक्रम में अनेक ऐसे परिवर्तन किये थे जो दुर्खीम की रुचि और प्रतिभा के अनुकूल थे। प्रोफेसर कुलान्गेस से ही दुर्खीम ने ऐतिहासिक शोध की आलोचनात्मक पद्धति को सीखा। बाद में दुर्खीम ने लैटिन भाषा में मॉण्टेस्क्यू (Montesquieu) पर जब अपना शोध प्रबन्ध लिखा तो उसे उन्होंने प्रोफेसर कुलान्गेस को ही आदर के रूप में समर्पित किया। अकादमी में अपने अध्ययन के दौरान दुर्खीम ने विभिन्न विषयों पर जो लेख लिखे, उनसे प्रभावित होकर प्रोफेसर इमाइल बुत्रोक्स ने उन्हें अपने निर्देशन में पी-एच. डी. की उपाधि के लिए थीसिस लिखने को आमन्त्रित किया। प्रोफेसर बुत्रोक्स समग्र की इकाइयों का पृथक् अध्ययन करने (Atomism) के विरोधी थे। उनका तर्क था कि कोई भी अध्ययन किसी तथ्य की समग्रता के आधार पर ही किया जा सकता है क्योंकि विभिन्न इकाइयों की अन्त:क्रिया और सम्मिलन से एक नयी वस्तु के रूप में समग्र का निर्माण होता है। बुत्रोक्स के अनुसार समाज स्वयं में एक वास्तविक सत्ता है जिसकी व्याख्या मनोवैज्ञानिक या जैविकीय तथ्यों के आधार पर नहीं की जा सकती। दुर्खीम पर प्रोफेसर बुत्रोक्स के इन विचारों का बहुत प्रभाव पड़ा। इसी के फलस्वरूप दुर्खीम ने सामाजिक तथ्य (social fact) तथा सामाजिक यथार्थवाद (social realism) जैसे सिद्धान्तों की रूपरेखा बनाना आरम्भ कर दिया। बाद में जब उन्होंने सन् 1893 में डॉक्टरेट की उपाधि के लिए लिखे गये शोध प्रबन्ध *'The Division of Labour in Society'* को प्रकाशित करवाया, तब इसे उन्होंने प्रोफेसर बुत्रोक्स को ही श्रद्धा के रूप में समर्पित किया। निश्चित रूप से यह दुर्खीम के जीवन पर इकोल अकादमी का प्रभाव था।

वास्तविकता यह है कि स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के समय से ही दुर्खीम अपने आपको किसी ऐसे विषय के अध्ययन में लगाना चाहते थे जिसके द्वारा वह कुछ प्रमुख नैतिक प्रश्नों का उत्तर ढूँढ़ सकें तथा जो विषय उनके समकालीन समाज की समस्याओं का समाधान करने में उनका व्यावहारिक निर्देशन कर सकें। उनका विश्वास था कि केवल एक ठोस वैज्ञानिक प्रशिक्षण के द्वारा ही यह सब कर पाना सम्भव है। इसी कारण उन्होंने यह निर्णय किया कि उनका प्रमुख उद्देश्य समाज का वैज्ञानिक अध्ययन करना होगा। दुर्खीम समाजशास्त्रीय आधार पर एक ऐसा वैज्ञानिक अध्ययन करना चाहते थे जिसे समाज के नैतिक विकास का एक साधन बनाया जा सके। उनका यह वह लक्ष्य था जिससे दुर्खीम फिर कभी अलग नहीं हुए। इसके बाद भी उस समय स्कूल अथवा विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा में समाजशास्त्र जैसे किसी विषय को मान्यता प्राप्त नहीं थी। फलस्वरूप सन् 1882 से 1887 के बीच दुर्खीम ने पेरिस के समीपवर्ती अनेक स्कूलों में दर्शनशास्त्र के शिक्षक के रूप में कार्य किया। इसी बीच वह एक वर्ष का अवकाश लेकर अपने आगामी अध्ययन के लिए पेरिस और जर्मनी में भी रहे। जर्मनी में उन्होंने दर्शनशास्त्र के अतिरिक्त दूसरे सामाजिक विज्ञानों, जैसे—अर्थशास्त्र, सांस्कृतिक मानवशास्त्र तथा मनोविज्ञान का अध्ययन किया। उनका अधिकांश समय जर्मनी के बर्लिन तथा लेपजिक नगरों में व्यतीत हुआ। लेपजिक में ही वह अपने समय के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक **विलहेम वुण्ट** (Wilhelm Wundt) के सम्पर्क में आये जिनके प्रभाव से उन्हें शोध कार्य के लिए वैज्ञानिक पद्धति के प्रयोग का प्रशिक्षण मिला। जर्मनी के समाज वैज्ञानिकों से ही उन्हें यह समझने की प्रेरणा मिली कि नैतिकता की सामाजिक जड़ें क्या हैं तथा किस प्रकार नीतिशास्त्र को एक स्वतन्त्र और वैज्ञानिक विषय बनाया जा सकता है। उन्होंने जर्मनी के बौद्धिक जीवन पर अपनी जो रिपोर्ट लिखी, उसके कारण दुर्खीम को 29 वर्ष की अवस्था में ही समाज विज्ञानों तथा सामाजिक दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में मान्यता

Scanned with CamScanner

मिलने लगी। जर्मनी के समाजशास्त्रियों जैसे **गुम्प्लोविज** तथा **शैफिल** (Gumplowiez and Schaeffle) की रचनाओं पर दुर्खीम ने जो समालोचनात्मक लेख लिखे, उनसे भी उनकी प्रसिद्धि बढ़ने लगी। इसके फलस्वरूप सन् 1887 में दुर्खीम बोर्डियाक्स विश्वविद्यालय में शिक्षक के रूप में नियुक्त हो गये। बोर्डियाक्स विश्वविद्यालय में दुर्खीम की नियुक्ति दर्शनशास्त्र विभाग में हुई थी लेकिन उच्च शिक्षा के निदेशक की संस्तुति पर उनके लिए इसी विभाग में समाज विज्ञान का पाठ्यक्रम भी आरम्भ कर दिया गया। यह एक आश्चर्यजनक घटना थी क्योंकि लगभग 10 वर्ष पहले इसी विश्वविद्यालय में दुर्खीम के समकालीन समाजशास्त्री एल्फ्रेड एस्पिनाज (Alfred Espinas) के शोध प्रबन्ध पर इसलिए आपत्ति की गयी थी कि उन्होंने इसकी भूमिका में से आगस्त कॉम्ट के नाम को निकालना स्वीकार नहीं किया था।

बोर्डियाक्स विश्वविद्यालय में अध्यापन के दौरान ही दुर्खीम का **लूसी ड्रेफू** (Louise Dreyfus) से विवाह हुआ। पुत्री मेरी तथा पुत्र आन्द्रे उनकी दो सन्तानें थीं। दुर्खीम के पारिवारिक जीवन के बारे में बहुत कम जानकारी मिलती है, यद्यपि यह अवश्य ज्ञात है कि दुर्खीम की पत्नी ने यहूदी परिवार की परम्परा का निर्वाह करते हुए अपना सम्पूर्ण समय परिवार को व्यवस्थित करने तथा दुर्खीम के विभिन्न कार्यों में उनकी सहायता करने में व्यतीत किया। बोर्डियाक्स विश्वविद्यालय में दुर्खीम का समय गहन चिन्तन और रचनात्मक लेखन का काल था। यहाँ उन्होंने टॉनीज तथा अनेक दूसरे विद्वानों के लेखों की समालोचना की तथा अपने अनेक व्याख्यानों को लेखों के रूप में प्रकाशित करवाया। सन् 1893 में उन्होंने फ्रेंच भाषा में अपनी पी-एच. डी. की थीसिस *'The Division of Labour in Society'* (समाज में श्रम-विभाजन) तथा लैटिन भाषा में मॉण्टेस्क्यू पर शोध प्रबन्ध प्रकाशित करवाया। इसके दो वर्ष बाद ही उनकी पुस्तक *'The Rules of Sociological Method'* (समाजशास्त्रीय पद्धति के नियम) प्रकाशित हुई जिसने समाजशास्त्रीय अध्ययन के लिए एक नयी दिशा दी। दो वर्ष बाद ही सन् 1897 में उनकी पुस्तक *'The Suicide'* (आत्महत्या) का प्रकाशन हुआ। इन तीन प्रमुख पुस्तकों से फ्रांस के बौद्धिक जगत में दुर्खीम को एक प्रतिभाशाली विद्वान के रूप में देखा जाने लगा। फ्रांस में जब समाजशास्त्र के प्रति विद्वानों की रुचि बढ़ने लगी तो इसका और अधिक विकास करने के लिए दुर्खीम ने सन् 1898 से *'L Annee Sociologique'* नामक समाजशास्त्रीय पत्रिका का सम्पादन करना आरम्भ कर दिया। यह एक उच्च कोटि की समाजशास्त्रीय पत्रिका थी जिसके माध्यम से समाजशास्त्र में रुचि रखने वाले युवा विद्वानों को अपने विचार स्पष्ट करने का अवसर मिल गया। साथ ही इस पत्रिका में प्रकाशित विचारों से एक नये समाजशास्त्रीय सम्प्रदाय का विकास हुआ जिसे 'दुर्खीम सम्प्रदाय' के नाम से जाना जाता है।

बोर्डियाक्स विश्वविद्यालय में 9 वर्ष तक दर्शन विभाग से सम्बद्ध रहने के बाद सन् 1896 में दुर्खीम को समाज विज्ञान का प्रोफेसर बना दिया गया। इस पद पर वह वहाँ 6 वर्ष तक कार्य करते रहे। इस समय तक दुर्खीम की गणना फ्रांस के प्रमुख विद्वान तथा शिक्षाशास्त्री के रूप में की जाने लगी। फलस्वरूप सन् 1902 में उन्हें पेरिस विश्वविद्यालय में शिक्षाशास्त्र के प्रोफेसर के पद के लिए आमन्त्रित किया गया। समाजशास्त्र की ओर दुर्खीम की बढ़ती हुई रुचि तथा उनकी उपलब्धियों को देखते हुए सन् 1913 में दुर्खीम द्वारा संचालित विभाग का नाम बदलकर **'शिक्षाशास्त्र एवं समाजशास्त्र विभाग'** कर दिया गया। इस प्रकार सन् 1838 में कॉम्ट ने फ्रांस में 'समाजशास्त्र' के नाम से जिस नये विज्ञान की कल्पना की थी, सन् 1913 में दुर्खीम ने फ्रांस में समाजशास्त्र का पहला प्रोफेसर बनकर उसे एक मान्यता-प्राप्त विषय का रूप देना आरम्भ कर दिया।

पेरिस में रहते हुए भी दुर्खीम ने अपनी पत्रिका *'L' Annee Sociologique'* का सम्पादन जारी रखा। इसमें उन्होंने नीतिशास्त्र, शिक्षाशास्त्र, धर्म, राजनीतिक दर्शन तथा सेण्ट साइमन और कॉम्ट के विचारों से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों का विद्वत्तापूर्ण विश्लेषण प्रस्तुत किया। इस समय राबर्ट्सन, स्मिथ तथा मानवशास्त्र के ब्रिटिश सम्प्रदाय से प्रभावित होकर दुर्खीम की रुचि धार्मिक तथ्यों के अध्ययन में बढ़ने लगी थी। फलस्वरूप उन्होंने पहले जनजातीय धर्म पर अनेक लेख लिखे तथा बाद में इन्हीं लेखों पर आधारित उनकी अन्तिम महत्वपूर्ण पुस्तक सन् 1912 में *'The Elementary Forms of Religious Life'* (धार्मिक जीवन के प्रारम्भिक स्वरूप) नाम से प्रकाशित हुई। दुर्खीम केवल एक महान विचारक ही नहीं थे बल्कि वह एक गम्भीर और सफल शिक्षक भी थे। कठिन-से-कठिन विषयों को भी सरल, तार्किक और आकर्षक ढंग से स्पष्ट करने की उनमें अपूर्व क्षमता थी। विभिन्न विषयों पर उनका भाषण बहुत प्रभावपूर्ण था। दुर्खीम के बारे

Scanned with CamScanner

में उनके एक विद्यार्थी की टिप्पणी का उल्लेख करते हुए **हेरी एल्पर्ट** (Harry Alpert) ने लिखा है, "जो व्यक्ति उनके प्रभाव से बचना चाहते हैं, उन्हें या तो उनके पाठ्यक्रम से अलग होना पड़ेगा अथवा इच्छा या अनिच्छा से उनकी विद्वत्ता को स्वीकार करना होगा।" सच तो यह है कि दुर्खीम ने केवल विश्वविद्यालय के अन्दर ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण पेरिस के बौद्धिक जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विश्वविद्यालय व्यवस्था को पुनर्संगठित करने में दुर्खीम के विचारों को बहुत महत्व दिया जाता था। अप्रत्यक्ष रूप से दुर्खीम शिक्षा मन्त्रालय के सलाहकार थे; उन्होंने स्कूल स्तर के पाठ्यक्रम में समाजशास्त्र विषय को सम्मिलित करने में योगदान किया तथा नागरिक प्रशिक्षण में समाजशास्त्र की भूमिका को प्रमाणित किया।

जीवन के अन्तिम वर्षों में अनेक दु:खद अनुभवों के बाद भी दुर्खीम ने एक देशभक्त समाजशास्त्री की भूमिका निभाई। सन् 1914 में जब प्रथम विश्वयुद्ध आरम्भ हुआ, तब देश की रक्षा के लिए बहुत-से युवा बुद्धिजीवी विश्वविद्यालयों और पुस्तकालयों को छोड़कर युद्ध-क्षेत्र में उतर आये। अनेक होनहार समाजशास्त्रियों और रॉबर्ट हर्ट्ज (Robert Hertz), एम. डेविड (M. David) तथा जीन रेनियर (Jean Reynier) की युद्ध में मृत्यु हो गयी। दुर्खीम को भी युद्ध के बारे में विभिन्न प्रपत्रों और अध्ययन सामग्री को प्रकाशित करने वाली समिति का सचिव नियुक्त किया गया। दुर्खीम ने अपना सम्पूर्ण समय युद्ध सम्बन्धी प्रचार सामग्री के सम्पादन और प्रकाशन कार्य पर लगाने के साथ ही जनता को 'धैर्य, प्रयत्न और विश्वास' का नारा दिया। दिसम्बर, 1915 में दुर्खीम को यह सूचना मिली कि उनका पुत्र आन्द्रे लड़ाई के मैदान में बुरी तरह घायल हुआ तथा बल्गेरिया के एक अस्पताल में उसकी मृत्यु हो गयी। अपने पिता की तरह आन्द्रे ने भी इकोल अकादमी में शिक्षा प्राप्त करके समाजशास्त्र तथा भाषाशास्त्र में नाम रोशन किया था। एकमात्र पुत्र के रूप में आन्द्रे से दुर्खीम को न केवल बहुत-सी आशाएँ थीं बल्कि उन्हें उस पर बहुत गर्व भी था। आन्द्रे की मृत्यु दुर्खीम पर एक ऐसा आघात था जिससे वह उबर नहीं सके। सन् 1917 में दुर्खीम ने पुन: नीतिशास्त्र पर कुछ लिखना आरम्भ किया लेकिन अन्दर से बुरी तरह टूट जाने के कारण 15 नवम्बर, सन् 1917 को 59 वर्ष की आयु में दुर्खीम की मृत्यु हो गयी।

दुर्खीम की कृतियाँ (Works of Durkheim)

समाजशास्त्र को एक पृथक् विज्ञान के रूप में प्रतिष्ठित करने तथा समाजशास्त्रीय अध्ययनों के लिए वैज्ञानिक आधार देने के लिए दुर्खीम ने अनेक महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखीं। इनमें से कुछ पुस्तकों का प्रकाशन उनके जीवन काल में ही हो चुका था, जबकि कुछ पुस्तकों का प्रकाशन दुर्खीम द्वारा सम्पादित शोध-पत्रिका *'L'Annee Sociologique'* में प्रकाशित उनके लेखों के आधार पर दुर्खीम की मृत्यु के बाद किया गया। इनमें से कुछ प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं :

(1) **समाज में श्रम-विभाजन** (Division of Labour in Society)—दुर्खीम द्वारा लिखित इस पुस्तक का प्रकाशन सन् 1893 में हुआ। यह पुस्तक डॉक्टरेट की उपाधि के लिए लिखे गये शोध प्रबन्ध पर आधारित थी। साधारणतया श्रम-विभाजन को एक आर्थिक विषय माना जाता है। इसके विपरीत, दुर्खीम ने इस पुस्तक में श्रम-विभाजन के सामाजिक कारणों तथा प्रभावों का उल्लेख करते हुए इसके सामाजिक पक्ष को स्पष्ट किया। **रेमण्ड एरों** के अनुसार, "दुर्खीम द्वारा लिखित यह पुस्तक व्यक्ति और समूह के बीच पाये जाने वाले अन्तर्सम्बन्धों को स्पष्ट करती है।" इसी पुस्तक में उन्होंने सामाजिक एकता की अवधारणा के साथ यान्त्रिक एकता तथा सावयवी एकता की प्रकृति को स्पष्ट किया। पुस्तक के प्रथम खण्ड में उन्होंने श्रम-विभाजन के प्रकार्यों और प्रभावों की विवेचना की, जबकि दूसरे खण्ड में इसके सामाजिक कारकों पर प्रकाश डाला। सावयवी एकता को उन्होंने श्रम-विभाजन के एक अनिवार्य परिणाम के रूप में स्पष्ट किया। अप्रत्यक्ष रूप से दुर्खीम के द्वारा प्रतिपादित सामाजिक उद्विकास की प्रक्रिया की रूपरेखा की विवेचना भी इसी पुस्तक में की गयी है।

(2) **समाजशास्त्रीय पद्धति के नियम** (The Rules of Sociological Method)—इस पुस्तक का प्रकाशन सन् 1895 में हुआ। इस पुस्तक को लिखने का उद्देश्य दुर्खीम द्वारा यह स्पष्ट करना था कि अन्य विज्ञानों की तरह कुछ वैज्ञानिक पद्धतियों की सहायता से सामाजिक घटनाओं का भी पक्षपातरहित होकर अध्ययन किया जा सकता है। दुर्खीम का दूसरा उद्देश्य समाजशास्त्र की अध्ययन-वस्तु का इस तरह निर्धारण करना था जिससे समाजशास्त्र को एक पृथक् विज्ञान की मान्यता मिल सके। इसी उद्देश्य को पूरा करने के लिए दुर्खीम ने अपनी इस पुस्तक के आरम्भ में ही यह स्पष्ट किया कि समाजशास्त्र की वास्तविक

Scanned with CamScanner

अध्ययन-वस्तु सामाजिक तथ्य हैं। उन्होंने सर्वप्रथम सामाजिक तथ्यों की प्रकृति और विशेषताओं की इस तरह विवेचना की जिससे उन्हें भौतिक, जैविकीय तथा वैयक्तिक तथ्यों से अलग करके उनका अध्ययन किया जा सके। पुस्तक के दूसरे अध्याय में उन्होंने उन नियमों की व्याख्या की जिनके द्वारा सामाजिक तथ्यों का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन किया जा सकता है। तीसरे अध्याय में दुर्खीम ने सामाजिक तथ्यों का वर्गीकरण तथा चौथे अध्याय में समाज के विभिन्न प्रकारों का वर्गीकरण प्रस्तुत करते हुए आगामी विवेचन में सामाजिक घटनाओं के कारण और प्रकार्यों की विवेचना की। अन्तिम अध्याय में उन्होंने तुलनात्मक पद्धति की रूपरेखा प्रस्तुत करके यह स्पष्ट किया कि सामाजिक तथ्यों का वैज्ञानिक अध्ययन करने के लिए यही सबसे उपयुक्त पद्धति है। इस प्रकार दुर्खीम वह पहले समाजशास्त्री थे जिन्होंने समाजशास्त्र को एक दृढ़ वैज्ञानिक आधार प्रदान किया।

(3) **आत्महत्या** (The Suicide)—फ्रेंच भाषा में दुर्खीम की इस पुस्तक का प्रकाशन सन् 1897 में हुआ। इस पुस्तक में उन्होंने आत्महत्या को एक सामाजिक तथ्य मानते हुए इसके विभिन्न प्रकारों को विस्तार से स्पष्ट किया। आत्महत्या का अध्ययन करने के लिए दुर्खीम ने पहली बार आनुभविक (empirical) तथा संख्यात्मक आँकड़ों का उपयोग किया। इसी के फलस्वरूप समाजशास्त्रीय अध्ययनों में आनुभविक अध्ययन की परम्परा आरम्भ हो सकी।

(4) **धार्मिक जीवन के प्रारम्भिक स्वरूप** (The Elementary Forms of Religious Life)—यह पुस्तक सन् 1912 में प्रकाशित हुई जो दुर्खीम के जीवन में प्रकाशित होने वाली उनकी अन्तिम पुस्तक थी। इस पुस्तक को आज भी 'धर्म के समाजशास्त्र' का प्रमुख आधार माना जाता है। दुर्खीम ने जनजातीय धर्म को धार्मिक जीवन तथा उससे सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के विश्वासों और अनुष्ठानों को धर्म का प्रारम्भिक स्वरूप मानते हुए इस पुस्तक में धर्म के प्रकार्यों की विस्तृत विवेचना की। उस समय जर्मनी में मैक्स वेबर तथा इटली के परेटो भी धर्म और समाज के पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन कर रहे थे लेकिन दुर्खीम ने अपनी पुस्तक में धर्म की विवेचना बिल्कुल नये ढंग से प्रस्तुत की।

उपर्युक्त पुस्तकों के अतिरिक्त दुर्खीम द्वारा जिस प्रमुख पत्रिका *'L' Annee Sociologique'* की सन् 1898 में स्थापना की गयी थी, उसमें दुर्खीम द्वारा लिखे गये विभिन्न लेखों का भी समाजशास्त्रीय साहित्य में विशेष स्थान है। इन्हीं लेखों के आधार पर उनकी मृत्यु के पश्चात् उनकी पत्नी तथा अनुयायियों तथा कुछ दूसरी पुस्तकों का भी प्रकाशन करवाया गया। इनमें से कुछ प्रमुख पुस्तकें इस प्रकार हैं :

1. शिक्षा तथा समाजशास्त्र (Education and Sociology, 1922),
2. समाजशास्त्र तथा दर्शनशास्त्र (Sociology and Philosophy, 1924),
3. शिक्षा नीति (Education Morale, 1925) एवं
4. फ्रांस में शिक्षाशास्त्र का उद्विकास (The Evolution of Pedagogy in France, 1938)।

इन सभी पुस्तकों के अतिरिक्त दुर्खीम ने विभिन्न विद्वानों की पुस्तकों तथा लेखों की जो समीक्षाएँ लिखीं, उनका भी समाजशास्त्रीय जगत में महत्वपूर्ण स्थान है।

समाजशास्त्र के लिए दुर्खीम का योगदान
(CONTRIBUTION OF DURKHEIM FOR SOCIOLOGY)

दुर्खीम एक मौलिक विचारक थे। वह अनेक दूसरे विद्वानों से प्रभावित अवश्य हुए लेकिन उन्होंने सभी विचारों को एक नया रूप देकर समाजशास्त्र को वास्तविक अर्थों में एक वस्तुनिष्ठ विज्ञान बनाने का प्रयत्न किया। समाजशास्त्र की व्यावहारिकता को स्पष्ट करते हुए उन्होंने लिखा, "समाजशास्त्र का मूल्य तभी तक है जब तक उसका उपयोग तात्कालिक समाज के सुधार में किया जा सके।" आरम्भ में दर्शनशास्त्र के अध्येयता और शिक्षक के रूप में उनका दार्शनिक दृष्टिकोण भी बहुत व्यावहारिक था। इसी कारण दुर्खीम ने समाज को नैतिकता पर आधारित मानते हुए यह विचार व्यक्त किया कि नैतिक व्यवस्था के बिना किसी भी समाज में सामाजिक एकता में वृद्धि नहीं की जा सकती। दुर्खीम के शब्दों में, "समाज कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसका नैतिकता पर गौण प्रभव पड़ता हो.....यदि सामाजिक जीवन ही समाप्त हो जायेगा तो उद्देश्यों का अभाव हो जाने के कारण नैतिक जीवन अपने आप समाप्त हो जायेगा।" अपने चिन्तन में

Scanned with CamScanner